चतुर्थ अध्याय

- कहानियों में चित्रित यथार्थ : परिवर्तन के संदर्भ में ---

१) यथार्थ चित्रण की लेखकीय भूमिका

२) यथार्थ चित्रण का लेखकीय लक्ष्य

३) यथार्थ चित्रण और सामाजिक परिवर्तन की अपेक्षा

४) उनकी वर्तमान कहानियों का यथार्थ

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय

कहानियों में चित्रित यथार्थ : परिवेश के संदर्भ में --

मिश्र जी ने सन् १९५० के आसपास कहानी लेखन शुरु किया। कहानी लेखन से पूर्व मिश्र जी कवि के रुप में काफी प्रसिध्द हुए थे। सन् १९५० से लेकर आज तक मिश्र जी निरंतर कहानी लेखन में सक्रिय रहे है। गत् चालीस बरसों में मिश्र जी ने करीब पैंसठ से उपर कहानियाँ लिखी हैं। अबतक उनके पाँच कहानी संग्रह और `इकसठ कहानियाँ ` नामक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी वर्तमान कहानियाँ `सारिका` जैसी कहानी-पत्रिका में प्रकाशित होती रहती हैं।

(१) यथार्थ चित्रण की लेखकीय भूमिका --

मिश्र जी ने अपनी कहानियों में सामाजिक यथार्थ को ही चित्रित किया है। मिश्र जी ने अपनी प्रारंभिक कहानियों में गाँव की सामाजिक जिन्दगी को चित्रित किया। उनकी प्रारंभिक कहानियों में उनका अपना गाँव ही दिखायी देता है। वहाँ के प्राकृतिक प्रकोप (बाढ) , प्रकृति के रंग, गंध, गाँव की भयानक गरीबी और अभिशप्त उदास चेहरे आदि बिम्बों से प्रेरणा लेकर उन्होंने अपनी प्रारंभिक कहानियाँ लिखी है। यही कारण है कि उनकी प्रारंभिक कहानियों में बाढग्रस्त जिंदगी, गरीबी की पीडा, प्रकृति के रंग-गंध, ग्राम - जीवन आदि सामाजिक यथार्थ को कहानियों में चित्रित किया है।

मिश्र जी अपनी नौकरी के कारण शहर-दर-शहर घूमते रहे। बनारस, बडौदा, नवसारी, अहमदाबाद, दिल्ली तक वे अपनी नौकरी की वजह से घूमे। इन शहरों के परिवेश को, उनकी सामाजिक जिन्दगी को वे जितना जीये इतना ही उनका चित्रण अपनी कहानियां में किया हैं। यही कारण है कि मिश्र जी की साठोत्तरी कहानियाँ नगरीय परिवेश की यथार्थ का सुन्दर चित्रण करती हैं। नगरों में आर्थिक दबाव के कारण बदलते मूल्य, बदलते संबंध, टूटती इन्सानियत, देहाती और शहरी मानसिकता द्वंद्व, नारी की विभिन्न समस्यायें आदि सामाजिक यथार्थ को उन्होंने अपनी कहानियों का विषय बनाया। उनकी साठोत्तरी कहानियाँ इसी भूमिका से लिखी गयी हैं।

आठवें दशक तक आते-आते मिश्र जी की कहानी आम आदमी के जिन्दगी के साथ और भी गहरे रुप में जुड जाती है। आजादी के बाद देश की बिगडती हुयी राजनीति, राजनेता, पुलिस, सरकारी अफसर, पूँजीपति आदि द्वारा आम जनता का होनेवाला शोषण, चारों तरफ बढता भ्रष्टाचार और काला - - बाजारी, महानगरों की खोखली चकाचौंध आदि समस्यायें मिश्र जी की कहानियों का मुख्य विषय बनी है। इसी भूमिका के कारण मिश्र जी की कहानियाँ आम-आदमी की जिंदगी की सामाजिक विसंगतियाँ और सामाजिक यथार्थ को चित्रित करती हुयी दिखायी देती हैं। मिश्र जी की नवें दशक की कहानियाँ भी इसी कोटि में आती हैं।

मिश्र जी की वर्तमान कहानियाँ भी सामाजिक यथार्थ को ही चित्रित करती हैं। मिश्र जी को अपने गाँव से नितांत प्रेम है। उनका गाँव कछार अंचल का है। दो नदियों के बीच घिरे रहने के कारण यह गाँव बाढग्रस्त रहता है। मिश्र जी के मनमें उनका अपना गाँव हमेशा जीता रहा है। उनकी वर्तमान कहानी ' जीवन के स्वर ' में यह भूमिका अधिक स्पष्टतासे दिखाई देती है। मिश्र जी की कहानियों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उनकी कहानियाँ सामाजिक जिंदगी के प्रति उनके लगाव की भूमिका से ही लिखी गयी हैं

(२) यथार्थ चित्रण का लेखकीय लक्ष्य --

आज कहानी साहित्य विधा में सबसे प्रमुख विधा मानी जाती है। आज कहानी केवल मनोरंजन के लिए नहीं लिखी जाती। कहानी मानव-जीवन के निकट पहुँची है। मिश्र जी की भी सभी कहानियाँ किसी न किसी उद्देश्य को लेकर ही लिखी गयी है। उद्देश्य के बिना कहानी प्रभावहीन लगती है।

मिश्र जी की प्रारंभिक कहानियाँ ग्राम जीवन को चित्रित करती है। अपने गाँव की गरीबी, पीडा, अभाव, बाढग्रस्त जिंदगी, प्रकृति के रंग, गंध आदि को अभिव्यक्ति देना ही मिश्र जी का उद्देश्य रहा है। उनकी कहानियों को पढनेपर यह स्पष्ट हो जाता है कि वे अपने उद्देश्य मे सफल रहे हैं। 'मनोज जी', 'बेला - - मरगयी', 'एक रात', गीतू', बदलियाँ' आदि कहानियों में यह बात स्पष्टतासे देखी जा सकती है।

मिश्र जी की सन् १९६० के बाद की कहानियाँ बहुमुखी यथार्थ का चित्रण करती है। सन् १९६० के बाद मिश्र जी ने अपने भोगे हुए यथार्थ को अपने कहानियोँ में स्पष्ट किया है। नौकरी की वजह से मिश्र जी शहर-दर-शहर घूमते रहे। वहाँ पर उन्होंने उन शहरी परिवेश को जितना भोगा उतना ही उसका चित्रण अपनी कहानियों में करना उनका उद्देश्य रहा। उनकी साठोत्तर कहानियाँ नगरीय परिवेश में अर्थ केन्द्रित संबंधो की पहचान कराती हैं। अर्थ के कारण बदलते संबंध, बदलते मूल्य, टूटती इन्सानियत आदि को चित्रित करना मिश्र जी का उद्देश्य रहा है। 'मुक्ति', 'चिट्ठियों के बीच', 'लाल हथेलियाँ', 'पिता', 'संबंध', 'घर', 'घर - - लौटने के बाद', 'बादलों भरा दिन' आदि कहानियाँ इस उद्देश्य को लेकर ही लिखी गयी है। साठोत्तरी कहानियाँ नारी की विभिन्न समस्याओं को स्पष्ट करने के उद्देश्य से लिखी गयी हैं।

मिश्र जी की आठवें दशक की कहानियाँ आम आदमी की जिन्दगी की विडंबना, भ्रष्ट राजनीति और चरित्रहीन, नेता लोग, भ्रष्टाचार और कालाबाजारी, महानगरीय जन जीवन की खोखली चकाचौंध, हरिजन वर्ग के दर्द-अभाव आदि को चित्रित करने के उद्देश्य से लिखी नजर आती है। 'एक वह', 'मुर्दा-मैदान', 'गपशप', 'दिनचर्या', 'कहाँ जाओगे', 'टूटे हुए रास्ते', 'सर्पदंश', 'जमीन', 'सड़क'

आदि कहानियाँ इसके लिए रेखांकित की जा सकती हैं।

मिश्र जी की नवतें दशक की कहानियाँ और उनकी वर्तमान कहानियाँ भी इसी तरह सामाजिक यथार्थ को चित्रित करने के उद्देश्य से ही लिखी गयी हैं। वर्तमान कहानियों में उनकी 'जीवन के स्वर' यह कहानी मिश्रजी का अपने गाँव के प्रति होनेवाले प्रेम को ही स्पष्ट करती है। मिश्र जी की सभी कहानियों का अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सामाजिक यथार्थ को ही चित्रित करना उनके कहानियों का लक्ष्य रहा है। मिश्र जी की कहानियाँ बहुमुखी सामाजिक यथार्थ को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करती हैं।

(३) यथार्थ चित्रण और सामाजिक परिवर्तन की अपेक्षा --

मिश्र जी ने आरंभिक काल में अपने गांव से, उसकी समस्याओं और प्रकृति के रंग-गंध आदि से प्रेरणा लेकर अपनी कहानियाँ लिखी हैं। उनकी ये कहानियाँ उनके गाँव की बाढग्रस्त जिंदगी, वहाँ की गरीबी, अंधविश्वास, आदि समस्याओं को पाठकों के सम्मुख रखती हैं। इससे मिश्र जी यह बात स्पष्ट करना चाहते हैं कि आजादी के बाद हमारी सरकार ने आजतक इन देहाती समस्याओं का कोई ठोस उपाय नहीं किया है। हमारे नेता लोग तो गाँव के अनपढ लोगों को सिर्फ भाषण और उपदेश देकर उनकी समस्याओं को अनदेखा करते हैं। देहात की यातायात की समस्या और अस्पताल, स्कूल जैसी जीवनावश्यक असुविधाओं की ओर हमारी सरकार का ध्यान आकर्षित करती है। इस संदर्भ में मिश्र जी की 'माँ, सन्नाटा और बजता हुआ रेडिओ', कहानी को रेखांकित किया जा सकता है। इससे मिश्र जी देहाती जिन्दगी में परिवर्तन चाहते हैं।

मिश्र जी की साठोत्तरी कहानियों में गाँव तथा शहर दोनों परिवेश की कहानियाँ दिखायी देती हैं। इन कहानियों के जरिए लेखक आज के बदलते युग में खत्म होती इन्सानियत, अर्थ केन्द्रित संबंधों और बदलते मूल्यों की ओर संकेत करके हमारे समाज में पैसा किस प्रकार इन्सानी संबंधों को जोडता या तोडता है इसका चित्रण करती है। इसी प्रकार नारी की विभिन्न समस्याओं की ओर जैसे नारी शोषण, विवाह की समस्या, पुरुषद्वारा नारी को भोग्या समझने की

प्रवृत्ति , दहेज प्रथा, वेश्या समस्या आदि समस्याओं को चित्रित करके नारी के प्रति उदारता का परिचय दिया है। इससे मिश्र जी नारी की स्थिति में परिवर्तन लाना चाहते हैं। मिश्र जी की 'आखिरी चिट्ठी', 'अकेला मकान', 'एक औरत एक जिंदगी', 'लड़की', 'हद से हद तक', आदि ऐसी कई कहानियाँ इसी उद्देश्य से लिखी गयी हैं, जो नारी स्थिति की परिवर्तन की माँग हमारे समाज से करती हैं।

मिश्र जी की आठवें दशक की कहानियाँ और उसके परवर्ती काल में लिखी गयी कहानियाँ आम आदमी की जिंदगी की विडंबना का चित्र प्रस्तुत करती है। जिसमें हमारी राजनीति का गलत् खेय्या, चारों तरफ फैलता भ्रष्टाचार और काला-बाजारी, महानगरों में फूटपाथ पर जीवन निर्वाह करने वाले परिवार तथा उनकी असुविधाओं का चित्रण प्रस्तुत करके इन जनसाधारण की जिंदगी दु:ख से सुख में परिवर्तित होने की अपेक्षा रखती है। उनकी 'मुर्दा-मैदान', 'एकवह', 'गपशप', 'दिनचर्या', 'कहाँ जाओगे', 'सड़क', 'टूटे हुए रास्ते', आदि कई कहानियाँ इस संदर्भ में रेखांकित की जा सकती हैं। मिश्र जी की वर्तमान कहानियों में 'जीवन के स्वर' यह कहानी उनके गाँव की बाढ़ग्रस्त जिंदगी, यातायात की समस्या, अस्पताल की असुविधा आदि समस्याओं का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करके अपने गाँव की जिंदगी में परिवर्तन चाहती है। मिश्र जी की 'संपर्दश', और 'मुर्दा-मैदान' यह कहानियाँ हरिजन तथा निम्न वर्ग के संगठन के अभाव में उनकी जिन्दगी में सामाजिक विकास और अन्याय, अत्याचार से बचने के लिए संगठन की माँग करती हैं। 'मुर्दा-मैदान' कहानी का यह तथ्य ; हम अलग-अलग चुपचाप सह लेते हैं, संगठन करके तो देखो, कैसी आग फूटती है तुम लोगों के भीतर से।'[१] इसी बात की ओर संकेत करता है कि निम्नवर्ग या हरिजन वर्ग को संगठन करके अन्याय, अत्याचार से संघर्ष करना चाहिए।

---

१ इकसठ कहानियाँ - रामदरश मिश्र - पृ.३५१।

(४) उनकी वर्तमान कहानियों का यथार्थ --

मिश्र जी की वर्तमान कहानियों में ' वह औरत ' और ' अपने लिए ' यह कहानियाँ नारी समस्या को चित्रित करती हैं। उनकी ' जीवन के स्वर ' यह कहानी उनके अपने गाँव की बाढ़ग्रस्त जिंदगी, यातायात की समस्या, देहाती असुविधाओं का चित्रण करती है। ' वह औरत ' कहानी दहेज प्रथा पर चोट करती है, तो ' अपने लिए ' यह कहानी गरीबी की पीड़ा, लड़की होने का अभिशाप आदि को चित्रित करती हैं।

नारी समस्या --

स्वतंत्रता के पश्चात नारी को समाज में पुरुष के ही समान सभी अधिकार प्राप्त हुए। पुरुष समाज बरसों से नारी पर अपना अधिकार जमाता आ रहा है। वह आज भी नारी को अपने अधिकारों के दबाव में ही रखता है। आजादी के बाद भी भारत में बरसों से चलती आयी दहेज-प्रथा मौजुद है। दहेज प्रथा कितनी ही औरतों का जीवन बरबाद कर रही हैं। हमारे संविधान ने इससे बचने के लिए कितने ही कानुनी उपाय बनाये, फिर भी यह प्रथा समूल नष्ट नहीं हुयी है। आज भी हमारे देश में न जाने कितनी बहूयें दहेज के नामपर जलायी जाती हैं। ' वह औरत ' कहानी में दहेज न देने पर उसका पति उस औरत को घर छोडने पर मजबूर कर देता है। वह कहता है कि, " तेरे में क्या है न रुप, न रंग, न बाप के यहाँ से दहेज ही लेकर आयी। "[१] उसकी लड़की को भी जलाकर मार डालते हैं। दहेज प्रथा पर चोट करते हुए लेखक लिखता है कि, " ससुरालवालों की भाषा में खाना बनाने समय उसकी साड़ी में आग लग गयी लेकिन दुनिया जानती है कि क्यों सास या ननद की साडी में आग नहीं लगती, खाली बहू की साडी में लगती है। "[२]

इसी प्रकार ' अपने लिए ' कहानी में लड़की होने के अभिशाप को स्पष्ट

---

१. सारिका - नवंबर १९८५, ' वह औरत ' रामदरश मिश्र - पृ.६३।
२ - वही - ,, पृ.६३।

किया गया है। लड़की अपने और अपने भाई के पालन-पोषण में भेद करने वाले माता-पिता के व्यवहार को स्पष्ट करते हुए कहती है कि, " भाई के लिए अच्छा से अच्छा इंतजाम होता - खाने-पीने के लिए, पहनने के लिए और मेरी तो बात छोड़िए, छोटी बहन को भी कुछ नहीं मिलता वह चीथड़े पहने टकुर-टकुर ताकती रहती।"[१]

(२) बाढ़ग्रस्त जिंदगी - देहाती असुविधाएँ --

मिश्र जी की 'जीवन के स्वर' यह कहानी बाढ़ग्रस्त जिंदगी को, गाँव के प्रति प्रेम को और गाँव की असुविधाओं को चित्रित करती है। यह कहानी लेखक के स्वयं भोगे हुए यथार्थ की कहानी है। लेखक अपने गाँव के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करते हुए कहता है," माँ, चाहे दुनिया घूम आऊँ अपना गाँव घूमने का सुख ही दूसरा है, अपना गाँव तो अपना गाँव है न।"

बाढ़ग्रस्त गाँव का, वहाँ के लोगों की जिंदगीयों का जो कि बाढ़ के वजह से खतरे में आती है उसका वर्णन करते हुए लेखक लिखता है कि ," हमने चौंककर देखा, सामने के मकान की दीवार गिर गयी थी। घर की औरतें फटी-पुरानी साड़ियाँ पहने अपनी लाज छिपाने के लिए अपने आंगन में इधर-उधर भाग रही थीं, उनके चेहरों पर एक दहशत छायी थी सारा मकान चूता है, ओसारा पहले से ही गिरा हुआ है इसलिए उस घर के पुरुष जिस ओसारे में हम खड़े थे, उसी में जमा थे. वे भागते हुए घर की ओर गये कि कोई दबदबा तो नहीं गया. दीवार जर्जर, छतें जर्जर एक गिरी, उसकी चिंता जितनी नहीं थी उससे अधिक चिंता बाकी दीवारों की थी कहीं वे रात को गिरेंगी, तो उनके नीचे सारा परिवार दब जायेगा।"[२] लेखक इस कहानी के जरिए यही बात स्पष्ट करना चाहता है कि उसका गाँव आज भी वही है जो कि उसके बचपन में था। उसके गाँव की जिंदगी आज भी पहले की तरह ही बाढ़ ग्रस्त और असुविधाओं से भरपूर है।

---

१ सारिका - नवंबर १९८७," अपने लिए' रामदरश मिश्र - पृ.३६।

२ सारिका - मई, १९८७ ' जीवन के स्वर' रामदरश मिश्र - पृ.३४।

इस प्रकार मिश्र जी की वर्तमान कहानियाँ भी अपने पूर्ववर्ती कहानियों की तरह ही सामाजिक यथार्थ को चित्रित करती हैं। 'जीवन के स्वर' इस कहानी से तो यही पता चलता है कि मिश्र जी आज भी अपने गाँव से जुडे हुए है। गाँव के प्रति उन्हें वही प्रेम है, जो कि उन्हें पहले था।

निष्कर्ष

रामदरश मिश्र जी ने साहित्य-सृजन की प्रारंभिक अवस्था में यह महसूस किया था कि वे जिस मिट्टी में पले थे उस मिट्टी से फिलहाल जुडे, उसमें वर्तमान जीवन-यापन करनेवाले उनके आत्मीय जनों के दैनिक जीवन में आजादी के एक दशक के बाद भी कोई परिवर्तन उन्होंने अनुभव नहीं किया। प्रगति और विकास से वंचित अपने अंचलको चित्रित कर उसे सदियों से चली आ रही प्राकृतिक एवं मानवीय विडंबना से मुक्त करने की भूमिका से उन्होंने अपनी कहानियों में समाज के यथार्थ का चित्रण किया। सामाजिक यथार्थ को उसके भूल रुप में प्रतिकृति के रुप में खडा करना उनका लक्ष्य नहीं था। बल्कि ऐसे चित्रण से वे पाठकों में इस परिवेश के प्रति आस्था जगाना चाहते थे और उनमें परिवर्तन की आकांक्षा भी रखते थे। अपनी कहानियों में चित्रित सामाजिक यथार्थ के माध्यम से शासक तथा जनता में नई चेतना जगाना, परिवर्तन लाना उनकी कहानियों का लक्ष्य रहा है।